कक्षा
9 से 12

हिन्दी व्याकरण
एवं
रचना-प्रबोध

कक्षा 9 से 12
हिन्दी व्याकरण एवं रचना प्रबोध

हिंदी व्याकरण
एवं
रचना-प्रबोध

(कक्षा 9, 10, 11 व 12 के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति

पुस्तक– हिंदी व्याकरण एवं रचना-प्रबोध
(कक्षा–9, 10, 11 व 12 के लिए)

संयोजक– डॉ. शिवशरण कौशिक, वरिष्ठ व्याख्याता, हिंदी विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा

लेखकगण–

1. डॉ. नवीन कुमार नंदवाना
   सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
   मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
2. श्रीमती दर्शना 'उत्सुक', प्रधानाचार्या
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
   चरण नदी-II, जयपुर
3. श्री रामेन्द्र कुमार शर्मा, प्रधानाचार्य
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मोखमपुरा, जयपुर

पाठ्यक्रम समिति

हिंदी व्याकरण एवं रचना-प्रबोध

(कक्षा-9, 10, 11 व 12 के लिए)

संयोजक :- डॉ. आशीष सिसोदिया, सहायक आचार्य
हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

सदस्य :-

1. डॉ. दीपिका विजयवर्गीय, व्याख्याता
   राजकीय स्नातकोत्तर महिला कॉलेज, चौमूं जिला-जयपुर
2. डॉ. नवीन नन्दवाना, सहायक आचार्य हिन्दी विभाग
   मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
3. श्री संजय कुमार शर्मा
   डाइट , हनुमानगढ़
4. श्री रमाशंकर शर्मा, व्याख्याता
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, धौलपुर
5. श्री अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
   राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रलावता, अजमेर
6. श्री महेशचन्द्र शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक
   राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय, कुण्डगेट, सावर, अजमेर

प्राक्कथन

*माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा स्वीकृत नवीन पाठ्यक्रमानुसार कक्षा 9, 10, 11 तथा 12 के लिए **'हिंदी व्याकरण एवं रचना प्रबोध'** विद्यार्थियों में भाषा-कौशल के विकास को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। शुद्ध लिखने तथा शुद्ध बोलने के लिए व्याकरण के नियमों की छात्रों को जानकारी होना आवश्यक है इसलिए व्याकरण के सभी आवश्यक अंगोपांगों का इस पुस्तक में समावेश किया गया है।*

यद्यपि आज हिंदी व्याकरण की पुस्तकों की कमी नहीं है लेकिन फिर भी भाषा नियमों की जानकारी के साथ व्यावहारिक व्याकरण की एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता महसूस की जा रही थी जो विद्यार्थियों को शुद्ध लिखना, पढ़ना तथा बोलना एवं व्याकरण के नियमों, उपनियमों को उदाहरण सहित अधिकाधिक स्पष्ट, सरल तथा सुबोध बनाने का कार्य कर सके। भाषा ही वह माध्यम है जो व्यवहार करने वाले व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण तथा पहचान कराती है। देश में अनेक प्रान्तीय भाषाओं के साथ अँगरेजी, उर्दू आदि का प्रचलन भी रहा है किन्तु सम्पर्क भाषा तथा राजभाषा के रूप में हिंदी देश के विशाल भू-भाग में बोली जाती है। इसलिए हिंदी का अखिल भारतीय स्वरूप तथा मानक रूप व्याकरण के नियमों की जानकारी के अभाव में नहीं बन सकता। अशुद्ध भाषा बोलने वाले व्यक्ति को शर्मिन्दा होना पड़ता है तथा शुद्ध बोलने वाले का आत्मविश्वास दिन दूना और रात चौगुना बढ़ता जाता है। आज हिंदी हमारे देश की भावात्मक राष्ट्रीय एकता का मूलाधार है।

प्राय: व्याकरण पढ़ते समय विद्यार्थियों में नीरसता का भाव आ जाता है। इसलिए इस पुस्तक में यह प्रयास किया गया है कि समकालीन विषय जैसे-कम्प्यूटर प्रयोग, पर्यावरण प्रदूषण, सड़क सुरक्षा, राष्ट्रीय एकता जैसे विषयों का समावेश कर निबंधादि पाठों को आकर्षण बनाया गया है। साथ ही बहुविकल्पीय प्रश्नों के द्वारा व्याकरण कौशल परीक्षण की पद्धति अपनाई गई है। विद्यार्थियों के लिए वर्तमान भाषिक चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए तथा उनमें पारिभाषिक शब्दावली का विकास हो, इस दृष्टि से पारिभाषिक शब्दावली परिशिष्ट भी पुस्तक में जोड़ा गया है।

लेखकगण